पुष्यभूति राजवंश का महान शासक हर्ष: शासन, सामाजिक,आर्थिक राजनीतिक जीवन

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

भाग:-1

छठी शताब्दी के मध्य गुप्त राजवंश की समाप्ति हो चुकी थी और विभिन्न छोटे छोटे स्थानीय शक्तियों का उत्कर्ष हुआ| ये आपस में संघर्षरत रहते थे और कमोबेस सभी की राजनीतिक व्यवस्था एक जैसी थी| इसी समय पुष्यभूति राजवंश या वर्द्धन वंश के महान शासक हर्ष ने एक सुदृढ़ प्रशासनिक ढांचा तैयार किया तथा लगभग 40 वर्षों तक (606-647 ई.) एक विस्तृत क्षेत्र पर सुदृढ़ता के साथ शासन किया| हालाँकि वह भी विघटनकारी शक्तियों पर अंकुश न लगा सका| इस लेख में हर्ष (Harshvardhan) के शासन काल की जानकारी के स्त्रोत, शासन प्रणाली, सामाजिक आर्थिक स्थिति, धार्मिक एवं भाषा साहित्यिक जीवन का वर्णन किया जाना प्रांसगिक होगा|

जानकारी के स्त्रोत

पुष्यभूति राजवंश या वर्द्धन वंश के इतिहास को जानने का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत साहित्यिक रचनाएं हैं| इनमें अग्रणी स्थान पर बाणभट्ट द्वारा रचित ग्रंथ हर्षचरित, कादंबरी, चंडीशतक आदि है| हर्षचरित इस राजवंश का प्रमुख साहित्यिक स्रोत है| ऐतिहासिक विषय पर सर्वप्रथम गद्य काव्य लिखने का प्रयास इसी में किया गया है ।इसी प्रकार कादंबरी से हर्ष कालीन सामाजिक तथा धार्मिक जीवन का वृत्तांत प्राप्त होता है| हर्ष ने स्वयं तीन नाटकों प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानंद की रचना की, जिससे तत्कालीन समाज एवं संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती है| विदेशी यात्रियों में ह्वेन त्सांग का विवरण प्रमुख है, यह हर्ष कालीन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के अध्ययन का प्रमुख स्रोत है|

प्रारम्भिक इतिहास

पुष्यभूति राजवंश या वर्द्धन वंश के शासक किस जाति के थे इसे लेकर विद्वानों में मतभेद हैं| हर्षचरित के अनुसार कुछ विद्वान उन्हें चंद्रवंशी क्षत्रिय मानते हैं, परंतु ह्वेन त्सांग ने उन्हें वैश्य माना है|

हर्षचरित में हर्ष के पूर्वज का नाम पुष्यभूति बताया गया है, जबकि उसके अभिलेखों के अनुसार पुष्यभूति राजवंश (Pushyabhuti dynasty) का प्रथम राजा नरवर्धन था| इसके पश्चात क्रमशः राज्यवर्धन प्रथम, आदित्य वर्धन, प्रभाकर वर्धन तथा राज्यवर्धन द्वितीय शासक बने|

हर्ष के पूर्वजों की राजधानी स्थाणुविश्वर थी जो श्रीकंठ जनपद के अंतर्गत आती थी| इस वंश का पहला महान शासक प्रभाकर वर्धन था| इसने हुणों को पराजित कर हुण हरिण केसरी की उपाधि धारण की| राज्यवर्धन की हत्या के बाद 600 ईसवी में हर्षवर्धन शासक बना|

नोट:- शेष अगले पोस्ट में।